आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 5 | अंक 06 | उदयपुर बुधवार 01 अप्रेल 2020 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

कोरोना से जंग में आगे आया जार
एक लाख ग्यारह हज़ार एक सौ ग्यारह रुपये का चेक सौंपा

उदयपुर (कार्यालय संवाददाता)। जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ राजस्थान की उदयपुर इकाई की ओर से 30 मार्च को उदयपुर जिला कलेक्टर श्रीमती आनन्दी को कोरोना रिलीफ फंड के लिए 1,11,111 (एक लाख ग्यारह हज़ार एक सौ ग्यारह) रुपए का चेक सौंपा गया।

जार पदाधिकारी जिला कलेक्टर को चैक सौंपते हुए

जार जिलाध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत ने बताया कि एक तरफ पत्रकार फील्ड में रिपोर्टिंग करते हुए लगातार कोरोना वायरस के खतरों के प्रति आमजन को आगाह कर रहे हैं। उन तक रोज सही व सटीक जानकारी पहुंचा रहे हैं तो दूसरी तरफ वे खुद आर्थिक सहयोग देकर अपना संवेदनशील नागरिक होने का दायित्व भी निभा रहे हैं। कोरोना के खिलाफ हर जंग हम सबको मिलकर लड़नी है। डॉ. भानावत ने पत्रकारों से रिपोर्टिंग के दौरान एहतियात बरतते हुए खुद सोशल डिस्टेंसिंग रखने, मास्क पहनने व नियमित रूप से सेनेटाइजर का उपयोग करने का भी आग्रह किया है।

जिला कलेक्टर ने कहा कि जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) ने स्वच्छ व सटीक पत्रकारिता के साथ ही समाजिक सरोकारों को निभाने की जो पहल की है वह सराहनीय है। संकटकाल में पत्रकारिता का यही धर्म है कि वह सूचना के साथ ही समय पर पीड़ितों तक राहत पहुंचाने व राहत दिलाने में मदद करें। जार से जुड़े सभी पत्रकारों को उन्होंने जिला प्रशासन की ओर से जारी सभी आपात सूचनाओं को सटीक तरीके से जन सामान्य तक पहुंचाने के लिए भी धन्यवाद दिया।

इस अवसर पर जिला इकाई के महासचिव अजय कुमार आचार्य, कोषाध्यक्ष अल्पेश लोढ़ा, उपाध्यक्ष भूपेन्द्रकुमार चौबीसा, सलाहकार संजय खाब्या, छोगालाल भोई, कुलदीपसिंह गहलोत, घनश्यामसिंह राव, संजय खोखावत, कमलेश झडोला, अभिमन्यू भी मौजूद थे।

इसी तरह सलूंबर उपखंड अधिकारी मणीलाल तीरगर ने आपदा राहत के लिए पूर्व जिला प्रमुख छगनलाल जैन द्वारा उपलब्ध कराए गए एक लाख रूपये का चैक तथा श्री बीसा नागेन्द्रा दिगंबर जैन सेवा संस्थान उदयपुर की ओर से 51 हजार रुपयों का चैक भी जिला कलक्टर को प्रेषित किया।

मुख्यमंत्री के निर्देश पर कैंसर पीड़िता को पहुंचाया पैतृक स्थान

जयपुर (सुजस)। दिल्ली के एम्स अस्पताल में पैर के कैंसर के इलाज के लिए आई पुष्कर की बालिका, विशाखा को अस्पताल से अचानक छुट्टी देने के उपरांत उसके पैदल ही अपने पैतृक गांव के लिए निकलने की सूचना मिलते ही मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने दिल्ली स्थित राज्य सरकार के अधिकारियों के माध्यम से उसे तुरंत अजमेर भिजवाने की व्यवस्था करवाई।

कोराना जैसी वैश्विक महामारी के मरीजों के ईलाज के कारण दिल्ली के एम्स अस्पताल में ओ.पी.डी बंद होते ही कैंसर जैसी गंभीर बीमारी के इलाज के लिए भर्ती पुष्कर की विशाखा को अचानक अस्पताल से बीच ईलाज में ही छुट्टी दे दी गई। इसके उपरांत सार्वजनिक एवं निजी वाहनों की अनुपब्लधता के कारण वे परिवार सहित पैदल ही अपने पैतृक स्थान पुष्कर के लिए रवाना हो गई।

अस्पताल की बेरुखी का शिकार हुई विशाखा की इस घटना की जानकारी मिलते ही मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने इसके लिए स्वयं संज्ञान लेते हुए इस संबंध में अजमेर एवं दिल्ली स्थित अधिकारियों को निर्देश प्रदान कर तुरंत कार्यवाही के निर्देश प्रदान किए। दिल्ली स्थित राजस्थान फाउंडेशन के आयुक्त धीरज श्रीवास्तव ने तुरंत विशाखा और उसके परिजनों से संपर्क स्थापित कर उनके रात्रि विश्राम एवं भोजन की व्यवस्था करवाई। इसके उपरांत दिल्ली पुलिस कमिश्नर और एम्स के डायरेक्टर से बात कर विशाखा के इलाज की मुकम्मल व्यवस्था भी सुनिश्चित की। एम्स प्रशासन के डॉक्टरों एवं अधिकारियों से वार्ता कर विशाखा का पुन: ईलाज शुरू करवाया।

धीरज श्रीवास्तव ने अजमेर जिला कलेक्टर से एम्बुलेंस की व्यवस्था व दवाइयों का प्रबंध कर पीड़िता को अजमेर भिजवाया। आगे के इलाज के लिए एम्स चिकित्सकों द्वारा विशाखा को 2 महीने बाद फिर से दिल्ली बुलाया गया है।

संकट की घड़ी में एकजुट होकर देश का दें साथ : राज्यपाल

जयपुर (सुजस)। राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने कोरोना वैश्विक महामारी की इस संकट की घड़ी में लोगों से लॉक डाउन का पालन करने और धीरज बनाये रखने हेतु मंगलवार को प्रदेशवासियों के नाम संदेश दिया। राज्यपाल ने कहा है कि संकट की इस घड़ी में सभी को एकजुट होकर देश का साथ देना है। इस वक्त घर में रहना ही देश की सच्ची सेवा है।

राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने कहा कि एक परिवार के सदस्य के नाते मेरा प्रदेशवासियों से निवेदन है कि किसी भी आपात स्थिति में जरूरत के लिए हेल्पलाइन नम्बरों पर फोन करें ताकि प्रशासन से तुरन्त आवश्यक मदद और चिकित्सा मिल सके। राज्यपाल ने कहा कि याद रखिए आप एकांत में है, अकेले नही।

राज्यपाल ने कहा कि यदि आपके आसपास ऐसे लोग हैं, जिनके पास खाने का सामान नही है, तो उनकी मदद अवश्य करें। समाज के किसी भी व्यक्ति से भेदभाव न करें। मदद करें लेकिन एक मीटर की दूरी जरूर रखें। साफ-सफाई का पूरा ध्यान रखें।

राज्यपाल ने कहा कि कोरोना वैश्विक महामारी से बचाव ही इसका इलाज है। हम लोगों को इस बीमारी से बचने के लिए सावधानियां बताई गई हैं। इन एहतिहात का हमें पालन करना है। यह हम सभी की भलाई के लिए है। कोरोना से बचने के लिए आवश्यक सावधानियों का हमें ध्यान रखना है। यह हमारे स्वयं के लिए तो जरूरी है ही साथ ही हमारे घर, परिवार, समाज, प्रदेश और देश भी सुरक्षित रह सकेगा।

राज्यपाल ने कहा कि आपके सुखद भविष्य के लिए मेरा आपसे नम्र निवेदन है कि आप घर पर रह कर इस संकट की घड़ी में एकजुट होकर देश का साथ दें।

उन्होंने कहा कि चिकित्सा पेशा महत्वपूर्ण है। इस पेशे से जुड़े चिकित्सक, नर्सिंग व फार्मेसी सहित अन्य स्टाफ, मीडिया, प्रशासन और पुलिस तत्परता से अपने दायित्वों का निर्वाह कर रहा है। मैं इन सभी को साधुवाद देता हूं। साथ ही दूध, सब्जी-फल और किराने के व्यापारी भी इस संकट के समय में अपना कार्य कर रहे है। यह सराहनीय है।

उन्होंने सभी व्यापारियों से अनुरोध है कि यह समय देश की सेवा का है। इस संकट के दौर में आप लोग कालाबाजारी या जमाखोरी जैसी कोई गतिविधि न करें। व्यवस्था को बनाने में सहयोग करें। यह हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है।

कोरोना वायरस संक्रमण रोकने हेतु 60 करोड़ रुपये व्यय होंगे : पायलट

जयपुर (सुजस)। उप मुख्यमंत्री चिन पायलट ने ग्रामीण क्षेत्रों में कोरोना संक्रमण से लड़ने हेतु पंचायती राज संस्थाओं को राशि आवंटित की है। उन्होंने बताया कि कोरोना वायरस संक्रमण को गांवों में प्रभावी तरीके से रोकने हेतु सुरक्षा किट व दवा छिड़काव पर लगभग 60 करोड़ रुपये व्यय किये जायेंगे।

पंचायती राज संस्थाएं इस राशि से स्वच्छता सामग्री यथा-सेनेटाइजर, मास्क, हाथ के दस्ताने आदि तथा कोरोना संक्रमण को रोकने हेतु आवश्यक दवाओं यथा-सोडियम हाइपो क्लोराइट का छिड़काव एवं वितरण की व्यवस्था करवा सकेगी।

उन्होंने बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों में कोरोना संक्रमण से लड़ने में सहयोग प्रदान कर रहे कार्मिकों एवं जनप्रतिनिधियों को स्वच्छता सामग्री उपलब्ध कराने हेतु पंचायती राज संस्थाओं को निर्देश दिये हैं।

पायलट ने बताया कि ग्राम पंचायत को अधिकतम 50 हजार रूपये, विकास अधिकारी, पंचायत समिति को अधिकतम 1 लाख रूपये तथा मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला परिषद् को अधिकतम 1.5 लाख रूपये की स्वीकृति जारी करने की अनुमति प्रदान की गई है। यह राशि उक्त अधिकारी व संस्थाएं राज्य वित्त आयोग पंचम के अनुदान मद से व्यय कर सकेंगे।

पोथीखाना

नेपाली घाट पर मारवाड़ी चाट का काव्य रस

नेपाली, मारवाड़ी तथा हिन्दी के चर्चित कवि लक्ष्मण नेवटिया विराटनगर में रहकर साहित्य, संस्कृति और कला-चेतना से जुड़ी विविध प्रवृत्तियों के माध्यम से नेपाली हिन्दी के साथ-साथ मातृभाषा मारवाड़ी के यश वर्धन में सक्रिय हैं।

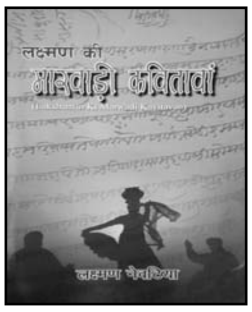

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की तरह लक्ष्मणजी भी 'निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति को मूल' मानते हुए अपने पूर्वजों से मिली मारवाड़ी भाषा की विरासत को अपनी सर्वोपरि जिम्मेदारी के साथ उसके संवर्धन-संरक्षण में लगे हुए हैं। पुस्तक के प्रारम्भ में अपनी टीप में उन्होंने लिखा भी है- 'मातृभाषा का अन्त अपने वजूद का अन्त होना है। भाषा का लुप्त होना पूरी जाति का लुप्त होना है। कोई भाषा सीखने में हर्ज नहीं किन्तु अपनी आपसी बोलचाल तो मातृभाषा में ही हानी चाहिए।'

नेपाली भाषा में उनके योगदान से वहां का हर पाठक परिचित है। पिछले डेढ़ दशक से राष्ट्रीय दैनिक 'उद्घोष' में 'लक्ष्मण को कुनो' स्तम्भ तथा एक अन्य दैनिक 'न्यू सृष्टि' में हाइकु लिखकर वे अपने काव्य-रसीय व्यंग्य-विनोद द्वारा आम पाठकों को रसमय जीवनानन्द की सौगात बांट रहे हैं। गोरखा पत्र में तो एक पूरा पृष्ठ ही मारवाड़ी को समर्पित किये वे कविता लेख द्वारा सीधे पाठकों से रू-ब-रू हो रहे हैं।

अपनी पुस्तक 'लक्ष्मण की मारवाड़ी कवितावां' में अपनी सरल सहज और सामान्य बोलचाल की लेखनी से ठेठ मारवाड़ी के मिठास के कारण वे पाठकों से अधिक श्रोताओं और श्रोताओं से अधिक पाठकों को गुदगुदी देते उनके ऊंडे अन्तस में स्थाई अन्तरे की तरह पैठ बनाये रखते हैं। लक्ष्मण नेवटिया की मारवाड़ी कविताओं को पढ़ते मुझे मालवी के मीठे कवि भावसार बा की स्मृति बार-बार याद हो आती है। मंच पर किसी श्रोता की ओर अपनी आंख और ऊंगली का कोर दिये जब वे 'मांगीलाल, माजना सूं मंदर में अइ गइ जें' कविता सुनाते तो ठठाठठ बैठा समाज असमंजस और अन्यमनस्कीय भावभूमि में खो जाता।

भूमिका में श्यामसुन्दर भारती ने यह ठीक ही लिखा कि लक्ष्मण की कविताएं जीवन के जटिल यथार्थ को दर्शाती हैं। बहुत सारे कवियों ने ऐसी कविताएं लिखीं पर वे बन्द कमरे के महाकवि बने रहे पर उनका कमरा सदैव उमस से भरा रहा। पर्दे से पिरा रहा। खिड़की तक नहीं खुली परन्तु हमें खिड़की ही नहीं खोलनी, उससे बाहर भी आना है। कवि लक्ष्मण ने कविताओं के माध्यम से हमें जीवन के यथार्थ से मुलाकात कराई।

समाज में कन्या की कमी से रू-ब-रू कराया। भ्रूण हत्या से अवगत कराया। लिखा-

'किसै गांव चले जावौ, छोरां को मेळौ है
छोरियां की कमी सूं उळटो पड़ियौ खेळौ है।
लाख करोड़ सोचणियां नै मिलियौ कोनी धेळौ है
छोरी फूटरी होयां उळटौ दहेज देण को हेळौ है।
घूमफिर नै सफासीधी सुणावौ पण भाईजी
आपरै छोरै तांई कोई छोरी है तौ बतावो।

असल में नेवटिया की कविता में जीवन के कड़ुए अनुभवों में जो सच्चाई है वह एक-एक पक्ष की परत खोल सच्चाई का दिग्दर्शन कराते हैं। कवि कहता है-

अे जिंदगी तू रोज-रोज नुवी कठिनाइयां क्यूं लावै?
जिंदगी बोली, अै कठिनाइयां इन तौर आदमी नै जानवर सूं अलग बणावै।

उनकी कविताओं में सादगी, सहजता, सरलता और पारदर्शिता है। सीधी सपाट बोलचाल में अपनी बात करती ये कविताएं गम्भीर अर्थ लिए सीधी पाठकों के हृदय को स्पर्श करती हैं।

कुल 160 पृष्ठीय 147 कविताओं की यह पुस्तक जयराम कृपालु, रंगली रोड़, विराटनगर-9 (नेपाल) से प्रकाशित नेपाली 160 तथा भारतीय 100 रूपये मूल्य की है।

-डॉ. कहानी भानावत

विचार वैभव की विरासत देती अन्तर्यात्रा

खरतरगच्छीय मुनि श्री मनितप्रभ सागरजी का विपुल धार्मिक साहित्य मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत सफल, आदर्श एवं

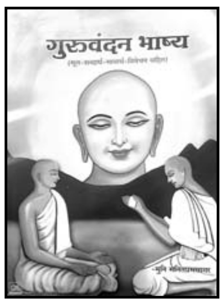

अनुकरणीय जीवन जीने की प्रेरणा लिए सर्वोपयोगी है। प्रत्येक जन इस साहित्य का पारायण कर सके इस दृष्टि से मूल्य भी कम रखा गया है।

धार्मिक साहित्य होने के कारण इसकी पवित्रता बनाये रखने के लिए पाठकों के लिए प्रारम्भ में ही निर्देश स्वरूप कहा गया है- कृपया पुस्तक के पांव न लगावें। झूठे हाथ से न छुएं। झूठे मुंह से स्वाध्याय न करें। जमीन पर न रखें। फाड़ें बिगाड़ें नहीं और न रद्दी में ही बेचें।

पांच पुस्तकों के सेट में दो एक जैसी हैं। प्रबुद्ध चेतना और समृद्ध चिन्तन के लिए विचार विरासत तथा साधना का सौंदर्य आराधना का ऐश्वर्य देने वाला विचार वैभव नाम से सौ-सवा सौ पृष्ठीय ये पुस्तें पचास रूपया मूल्य की हैं। इनके प्रारम्भ में मंगलामृत शीर्षक से आचार्य जिनमणि प्रभ सूरि का आशीर्वाद है। उनके अनुसार इनमें विषयों का वैविध्य पर लक्ष्य की एकात्मक प्रतिबद्धता है। कुछ विचार-कण द्रष्टव्य हैं-

(1) जीवन का प्रथम आलेख जन्म और अन्तिम आलेख मृत्यु है।

(2) मरना तो एक दिन है ही पर ऐसे मरो कि जीवन महक उठे।

(3) आंसुओं के अनेक आशय बताये हैं। यथा ममता, आत्मीयता, वात्सल्य, प्रेम, समर्पण, करूणा, श्रद्धा, स्वार्थ, मैत्री, कल्याण, सद्भावना के आंसुओं में मां की ममता के आंसू सर्वश्रेष्ठ रचना है। (विचार विरासत से)

गुरु वन्दन भाष्य श्रीमद् देवेन्द्रसूरि विरचित है। वर्तमान में प्रचलित तीन भाश्यों की रचना चौदहवीं शताब्दी में हुई। इनमें से दो का अर्थ-विवेचन पूर्व में प्रकाशित है।

यह उस कड़ी का अन्तिम भाष्य है। इसे जिज्ञासुओं से भी अधिक पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए उपयोगी बताया है। इसकी पृष्ठ संख्या और मूल्य भी वही है।

शेष दो पुस्तकें अन्तर्यात्रा और अन्तर्नाद जेबी पुस्तकें हैं। 64 पृष्ठों में नयनाभिराम सज्जा लिये ये सचित्र प्रकाशन 64 पृष्ठों के तीस रूपया मूल्य लिए हैं। सभी प्रकाशन श्री जिनक्रांति सागर सूरि स्मारक, जहाजमन्दिर, मांडवला, जिला जालोर (राज) से प्रकाशित हैं।

- डॉ. तुक्तक भानावत

महान होने के गुर

-सीताराम गुप्ता-

संसार में किसी भी क्षेत्र में सर्वोच्च शिखर पर पहुंचना सरल नहीं होता। बात चाहे साहित्य-संस्कृति अथवा कला की हो, व्यवसाय अथवा समाज सेवा की हो या अन्य किसी भी क्षेत्र की। किसी भी क्षेत्र में महानता प्राप्त करने वाले लोग कुछ दुर्लभ गुणों से ओतप्रोत होते हैं जो सामान्य लोगों में दुर्लभ होते हैं।

कुछ व्यक्ति इसीलिए महानता की श्रेणी में आ जाते हैं क्योंकि वे वे सभी कार्य करते हैं जिन्हें सामान्य व्यक्ति नहीं करते अथवा महत्व नहीं देते। और वे कुछ ऐसे कार्य करते ही नहीं जिनके करने में सामान्य व्यक्ति अपना अधिकांश समय नष्ट कर देते हैं।

कुछ व्यक्ति उन्हें जो भी करना होता है उसे फौरन कर डालते हैं और जो नहीं करना होता उसे न तो करते हैं और न उसके न करने पर परेशान रहते हैं। ये कर लेता तो शायद अच्छा रहता या ये नहीं करता तो बहुत ठीक रहता इस प्रकार की उधेड़बुन और द्वंद्व से दूर रहने वाले व्यक्ति अपने जीवन में सचमुच बहुत आगे पहुंच जाते हैं। एक आम आदमी अपना सारा समय निरर्थक बातों के चिंतन व बेकार की उधेड़बुन में नष्ट कर डालता है। कुछ लोग किसी भी कार्य को करने से पहले फौरी लाभ-हानि का आकलन नहीं करते। वे कार्य की समाज के लिए उपयोगिता के तत्व पर ज़्यादा ध्यान देते हैं और किसी भी कीमत पर ऐसा कोई कार्य नहीं करते जिससे समाज अथवा राष्ट्र कमज़ोर हो। स्वाभाविक है कि ऐसा महान लोग ही कर सकते हैं।

इसके विपरीत एक सामान्य व्यक्ति किसी भी कार्य को करने से पूर्व व्यक्तिगत लाभ-हानि का आकलन करने के पश्चात ही कोई कार्य प्रारंभ करता है। ऐसी संकुचित सोच रखने वाले व्यक्ति कभी महान नहीं हो सकते। बड़ी सोच का परिणामस्वरूप ही किसी को महानता की प्राप्ति होती है।

मुझे उर्दू के प्रसिद्ध शायर बेकल उत्साही का एक शेर याद आ रहा है-

ऐ हवाओं के झकोरो कहां आग ले के निकले,
मेरा गांव बच सके तो मेरी झोंपड़ी जलादो।

ऐसा जज़्बा जो सबके कल्याण के लिए अपना सर्वस्व लुटाने से भी परहेज न करे ही किसी को महान बना सकता है। जो सिर्फअपना घर बचाने के लिए पूरी दुनिया को दांव पर लगा दें वो महान नहीं निकृष्टतम होते हैं। महान लोग अपने से अधिक दूसरों के लिए चिंतित रहते हैं। वे यदि किसी को दुख-दर्द में देखते हैं तो जब तक उनका दुख-दर्द दूर नहीं कर देते चैन से नहीं बैठते।

महान व्यक्तियों के लिए व्यक्तिगत उन्नति महत्तव नहीं रखती। वे किसी से आगे निकलने की बजाय सबको साथ लेकर चलते हैं। महान लोगों के स्वभाव में सहनशीलता व क्षमाशीलता बहुत अधिक होती है। वे छोटी-छोटी अथवा महत्वहीन बातों पर ही नहीं किसी भी बात पर उत्तेजित नहीं होते। लाभ-हानि की अवस्था में सम भाव बनाए रखते हैं।

आर्थिक हानि उनके लिए कोई महत्व नहीं रखती। वे उदात्त जीवन मूल्यों के लिए जीते हैं। वे लोगों में कमियां अथवा गलतियां ढूंढ़ने की बजाय उनमें अच्छाइयां व गुण देखते हैं। वे उनकी अच्छाइयों को बाहर लाने का प्रयास करते हैं जिससे वे अपनी क्षमता का सही उपयोग कर सकें। दूसरों की गलतियों को क्षमा करने वाला महान होता है।

महान लोग अपनी गलतियों को स्वीकार कर उन्हें सुधारने में विश्वास करते हैं और दूसरों की गलतियों के लिए उन्हें दंडित अथवा अपमानित करने की बजाय उन्हें क्षमा करना श्रेयस्कर समझते हैं। जो दूसरों को अपमानित अथवा दंडित करने के अवसर खोजते रहते हैं वे कभी महान नहीं हो सकते। महान व्यक्तियों के स्वभाव में जड़ता नहीं होती।

वे सभी परिस्थितियों व व्यक्तियों को खुले दिल से स्वीकार करते हैं। वे अपने प्रतिद्वंद्वियों व विरोधियों का भी सम्मान करते हैं तथा उनकी अच्छी बातों की दिल खोल कर प्रशंसा भी करते हैं। उनकी अच्छी बातों को स्वयं अपनाने में भी उन्हें संकोच नहीं होता।

कोरोना से बचाव के लिए टाटा ट्रस्ट्स द्वारा 500 करोड़ की मदद

उदयपुर (विज्ञप्ति)। भारत और पूरी दुनिया में स्थिति गंभीर हो चुकी है और इस वक्त तुरंत कार्यवाही करना जरुरी है। टाटा ट्रस्ट्स और टाटा ग्रुप की कंपनियों ने इसके पहले भी जरुरत की घड़ी में देश की मदद की है। टाटा ट्रस्ट्स के चेयरमैन रतन टाटा ने कहा कि आज के इस मुश्किल दौर में मानव जाति के सामने आयी सबसे कठिन चुनौतियों में से एक कोविड 19 विपदा के खिलाफ लड़ने के लिए जरूरतों को पूरा करने के लिए तत्काल आपातकालीन संसाधनों को तैनात करने की आवश्यकता है। टाटा ट्रस्ट्स, सभी प्रभावित समुदायों की सुरक्षा और सक्षमीकरण के लिए अपनी प्रतिज्ञा को जारी रखते हुए 500 करोड़ रुपये फ्रंटलाइन पर कार्यरत चिकित्साकर्मियों के लिए व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण, बढ़ते हुए मामलों के इलाज के लिए श्वसन प्रणाली (रेस्पिरेटरी सिस्टम्स), टेस्टींग की क्षमता को हर व्यक्ति तक बढ़ाने के लिए टेस्टींग किट्स, संक्रमित मरीजों के लिए मॉड्यूलर उपचार सुविधाओं की स्थापना एवं स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं और आम जनता तक जानकारी पहुंचाने के लिए प्रबंधन और प्रशिक्षण कार्यों के लिए प्रतिबद्ध कर रहा है। टाटा ट्रस्ट्स, टाटा सन्स और टाटा समूह की कंपनियां अपने स्थानीय और वैश्विक सहयोगियों और सरकार के साथ मिलकर वंचित लोगों तक पहुंचने के लिए प्रयास करने वाले एक संयुक्त सार्वजानिक स्वास्थ्य सहयोग मंच पर इस संकट के खिलाफ लड़ रहे हैं।

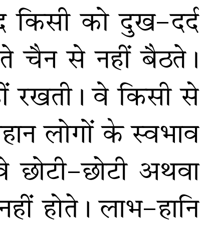

स्मृतियों के शिखर (96) : डॉ. महेन्द्र भानावत

चित्तौड़ के किले पर भूतों का मेला

राजस्थान में एक से एक बढ़-चढ़कर कई दुर्ग हैं मगर 'गढ़ तो चित्तौड़गढ़ और सब गढ़ैया' ही कहे जा सकते हैं। चित्तौड़ कई बार जाना हुआ। कभी ग्राम्य मनोरंजन के सूर्य की पहली किरण तक रात-रात भर खेले जाने वाले तुर्रा ख्यालों के उस्ताद चैनराम से मिलने तो कभी बहुरूपियों की स्वांग-झांकियों के सिलसिले में। बसी गांव भी इसी के पास स्थित है जहां की काष्ठकला-कठपुतलियां और कावड़ों ने विदेशियों तक को प्रभावित कर रखा है। चित्तौड़ के छींपे भी बड़े प्रसिद्ध हैं जो कपड़ों पर पुरानी चाल की छपाई करने में कारीगर-उस्ताद हैं।

चित्तौड़ का किला तो बड़ा जोर जबर्दस्त है ही। यहां का प्रत्येक कण अपनेआप में इतिहास शौर्य का जीता जागता दस्तावेज है किन्तु उतना ही अब मौन, शान्त, गुपचुप। चाहिये उसे कोई जगाने वाला। जो कुछ यहां सुनने-पढ़ने को मिलता है वह तो 'कुछ नहीं-कुछ नहीं' है। यहीं लोगों के मुंह से सुना कि हर दीवाली पर भूतों का बड़ा भव्य मेला लगता है। जानने को तो सारा चित्तौड़ जानता है यह बात। आसपास के इलाके भी जानते हैं मगर देखा किसी ने नहीं।

जौहर कुण्ड

यह देखा मैंने। पहलीबार एक देहधारी मनुष्य ने। लोकदेवता कल्लाजी राठौड़ की दिव्यात्मा ने अपने सेवक सरजुदासजी के शरीर में प्रविष्ठ हो मेरे अन्तर्चक्षु खोले और 15 नवम्बर 1982 की दीवाली को इस अद्भुत, अलौकिक एवं अविस्मरणीय मेले का साक्षात्कार कराया। इस साल दो दीवाली पड़ी। यह मेला भी दोनों दीवाली को भरा।

दीपावली के एक दिन पूर्व, रूप चवदस को ही मैं सरजुदासजी के साथ चितौड़गढ़ पहुंच गया। वहां अन्नपूर्णा माताजी के मन्दिर में हमारे ठहरने की व्यवस्था हो गई। रात को दस बजे करीब हम सोने को ही थे कि अचानक सरजुदासजी के शरीर में सेनापति मानसिंहजी का भाव आया। नीची बंद आंखें किये बड़े नपेतुले शब्दों में वे बोले- 'मुझे दो दिन पहले भेजा है सारी व्यवस्था के लिए। दस हजार सैनिक जगह-जगह नाकेबंदी कर खड़े हैं। आप लोग जब यहां रहेंगे तब तक वे आपकी रक्षा के लिए यहीं रहेंगे.... दुनिया ने मुझे नमकहराम कहा पर मैं नमक को कभी नहीं भूला। बड़े-बड़े राजा हमारे पीछे थरथराते थे। कोई नहीं जानता कि दुश्मन के घर रह हमने खाया पीया मगर काम अपना किया।

ऐतिहासिक चित्तौड़गढ़

यह जय चित्तौड़ है। यहां बड़ी-बड़ी सतियां हुई हैं। यह एक ऐसी धरती है जिसे जब-जब प्यास लगी, इसने पानी के बजाय खून लिया है। इस मेले में सभी तरह के लोग आयेंगे। अच्छे भी होंगे और बुरे भी। जो कुछ देखें मन में रखें।'

मैंने विनीत भाव से उनकी यह बात सुनी और 'हुकम-हुकम' कहा। अपनी इस बात के दौरान उन्होंने बार-बार 'दुनिया के बेटे' और 'जय विश्वंभर' शब्द का उच्चारण किया। यह सब कहकर हमें सावचेत कर, भलावण देकर मानसिंहजी चले गये पर रात को जब-जब भी मेरी नींद खुली, मैंने पाया कि मानसिंहजी उस पूरी रात सारी व्यवस्था ही करते रहे। कभी मैंने सुना, वे निर्भयसिंह को बुलाकर आवश्यक निर्देश दे रहे हैं तो कभी सिणगारीबाई से बातचीत कर रहे हैं कि सारी व्यवस्था देख लेना। यह कर लेना, वह कर लेना। वे कइयों के नाम लेते जा रहे हैं और फटाफट निर्देश देते जा रहे हैं।

दीवाली के दिन, दिनभर मैंने शिव मन्दिर और उसके अहाते में बने महल में मीरांबाई का निवास देखा। महल के सामने मीरां की दोनों दासियों के खण्डहर-चबूतरे देखे। पास में बना भोजराज का महल देखा। गोमुख देखा और जौहर कुण्ड देखा। उधर लाखोटिया बारी का वह लम्बा फैला परिक्षेत्र देखा। वह स्थान देखा जहां जयमलजी रात को टूटी हुई दीवाल ठीक करा रहे थे कि धोखे से अकबर ने अपनी 'संग्राम' नामक बन्दूक का उन्हें निशाना बनाया। उनकी टांग में गोली लगी। वे जिस चट्टान पर जाकर सोये वहां अभी भी खून गिरा हुआ है।

जयमल और पत्ता

मेरे साथ सरजुदासजी कम, कल्लाजी ही अधिक रहे। जब-जब भी उन्हें किसी स्थान के सम्बन्ध में किस्से, बीती घटना, इतिहास और उससे जुड़े प्रसंग बताने होते वे सरजुदासजी में साक्षात् हो आते और एक-एक कण-कण का विस्तृत हाल बता जाते, रोमांचित कर जाते। उनके जाने के बाद मुझे वे सारी चीजें सरजुदासजी को बतानी पड़तीं कारण कि तब सरजुदासजी नहीं होते, कल्लाजी होते। मीरां के सम्बन्ध में तो कई चौंकाने वाली बातें बताईं। उसका तो सारा इतिहास ही अलग है। वह फिर कभी कहा जायेगा।

वीरवर कल्लाजी राठौड़

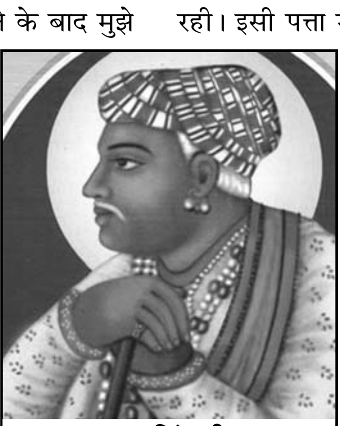
मानसिंहजी

शाम को 7 बजे करीब मैं और सरजुदासजी मेले के लिए अन्नपूर्णा माताजी के मन्दिर से चले। साथ में मिठाई, नमकीन, धार (शराब), गूगल, अतर, अगरबत्ती, अमल, कंकू, केसर, चावल, रोली, पानी, हूक्का, गुड़ मिश्रित गेहूं की घूघरी (बाकला) आदि लिया ताकि मेले में आये सुगरे-नुगरे देवताओं को राजी कर सकें। मन्दिर के अपने कमरे से बाहर आकर सर्वप्रथम हमने सबको नूता, न्यौता दिया। कहा- 'जितने भी देवी-देवता, पीर-पैगम्बर, शूर-सती हैं, सब मेले में पधारजो। हम आपको नूतने आये हैं। हमें और कुछ नहीं चाहिये। केवल आपके दरसन करने आये हैं।'

हम कालिका मन्दिर के सामने जाकर बैठ गये और एक बिछात पर सारा सामान तरतीबवार रख दिया। अंधेरा घना बढ़ता जा रहा था। कोई आवागमन नहीं था। लगभग साढ़े आठ बजे तक हम चुपचाप बैठे रहे और प्रतीक्षा ही करते रहे। इस बीच कभी कोई जोर की आवाज आती, कभी जोरों का कोई प्रकाश बिंब आता दिखाई देता। कभी हवा जोर की सन्नाटे वाली लगती और कभी बिलकुल शान्त। कभी किसी स्थान विशेष पर लगता कि आदमियों का जुड़ाव है तो कभी पास-दूर महल-खण्डहरों में चहल-पहल होने का एहसास होता। हम आंखें फाड़-फाड़ कर दूर-नजदीक अपने आसपास चारों ओर देखते। मुझे लगता जैसे कोई पुष्पक विमान आया और पुनः लोप हो गया।

लगभग साढ़े नौ बजे अचानक मानसिंहजी आये और बोले- 'जल्दी करो, अपना सामान समेटो, सब इधर ही आने वाले हैं, दो दीवाली होने के कारण इस दीवाली पर नुगरे (बुरे) ही अधिक आये हैं मगर आप डरें नहीं। मैं आपके साथ रहूंगा।' सारा सामान समेटने में मुझे कोई समय नहीं लगा और मैं चल पड़ा उनके साथ। ऐसा लग रहा था कि किसी बड़ी भीड़ में मैं जा फंसा हूं। जैसे जानवर भड़क गये हों और बेराकटोक भाग रहे हों, ऐसे भूत-प्रेत भागे जा रहे थे धक्कामुक्की करते। भीड़ भरे मेलों में जो स्थिति होती है वैसी ही मेरी होती रही मगर उसी तेजी से मानसिंहजी कभी बाकले लुटाते, कभी मिठाई, कभी धार देते। पूरे रास्ते हम त्वरा से बढ़ते रहे। बीच राह पर एक जगह मुझे उन्होंने रोक दिया।

सामने देखा, पत्ता महल के पास वाले तालाब में घुड़सवार के रूप में जयमलजी की आकृति। एक तेज प्रकाशपुंज। पृष्ठभूमि में घना अंधेरा। काफी देर तक मैं उस दिव्यात्मा के दर्शन करता रहा। बड़ा आत्मीय सुख मिला। जब तक मेरा मन भरा नहीं तब तक वह दिव्य आत्मा मेरे सम्मुख बराबर बनी रही। इसी पत्ता महल के आसपास डेरे डले हुए थे। तम्बू लगे हुए थे। थोड़ी देर बाद पत्ता महल से जोर-जोर की आवाजें आईं। मुझे सावचेत किया गया। मैने देखा, महल के बीचोंबीच ठेठ भीतर तक वैसा ही प्रकाशपुंज कुछ अधिक तेजोमय दिखा आकृति विहीन, यह दाताजी कृष्ण की छवि थी। इसके पश्चात एक अपेक्षाकृत छोटी दिव्याकृति और दिखाई दी। यह कुंभाजी की थी। एक विराट आदमकद आकृति।

यह सब कुछ दस ही मिनिट का खेल रहा होगा।

कालिका मन्दिर से मोती बाजार तक की कोलतार से बनी पक्की सड़क हमने कैसे नापी, कुछ पता नहीं चला। पता चला कि इतनी मिठाई, नमकीन और बाकले, मुट्ठी भर-भर डाले, बिखेरे पर धरती पर इनका एक कण तक नहीं गिरा। धार की बोतल खाली की मगर कोई बू तक नहीं आई। अंत में बोतल फैंक दी पर उसकी कोई आवाज नहीं सुनाई दी।

-शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, बुधवार 01 अप्रेल 2020

सम्पादकीय

कोरोना से जूझते हुए

भारत बहुत सहनशील देश है। यहां सदैव सुकाल नहीं रहा। अनेक कालों में समय-समय पर आपात काल आते रहे। जनता ने बड़ी बहादुरी से उनका मुकाबला किया। अनेक बार खण्ड प्रलय हुए। प्रकृति ने जब-जब परीक्षा ली, पुरुष ही नहीं, महिला शक्ति भी आगे आई।

महिलाओं ने तो गजब की शक्ति दिखाई। स्फूर्ति और शौर्य में पुरुषों को भी सीख दी। मेवाड़ की माटी सबसे महिमावान बनी। यहां अनेक अकाल पड़े। छपन्या का अकाल तो आज भी रौंगटे खड़े कर देता है। महाराणा प्रताप ने तो गर्दिश के दिन झेले। हरी घास की रोटी उन्होंने भी खाई। दरअसल वह अकाल के अनाज की रोटी थी। आज भी वह अनाज आदिवासी इलाकों में सुरक्षित है।

वीरों के साथ मेवाड़ वीरांगनाओं की भूमि रहा। यहीं महिला सैनिकों ने, मौका आने पर दुश्मनों से मुकाबला किया। राणा सांगा की पत्नी जवाहरबाई के समय महिला सैनिकों ने जबर्दस्त युद्ध किया। यहीं रानी पद्‌मिनी की व्यूह रचना से अल्लाउद्दीन खिलजी को पराजय मिली। यहीं जौहर जैसी घटना घटी। यहीं हाड़ीरानी का पराक्रम रहा। यहीं हल्दीघाटी के युद्ध में महिला सैनिकों का दमखम छाया रहा।

किसी आपदा का रोते हुए मुकाबला करने की रीत भारत की नहीं रही। मातृभूमि की रक्षार्थ झूले में झुलाते बालक को जन्मघुट्टी के रूप में माता मृत्यु धर्म की सीख देती दुलारती है। विपत्ति में धैर्य खोने के बजाय शान्त चित्त से हंसते-हंसते मुकाबला करने की समूहबद्ध धारणा हर काल, समय, समाज में महिलाओं ने अधिक निभाई है।

देवी-देवताओं की साक्षी में शक्ति का वरदान पाकर महिला शक्ति ने स्वयं शक्तिवंता बनकर कमाल दिखाया है इसीलिए महामारी, दुष्काल, अकाल के गीत महिलाओं में शौर्य बनकर श्वंत-क्रान्ति के स्वर बने हैं।

वर्तमान में कोरोना का विकराल रूप हम सब देखने से अधिक भोग रहे हैं तब भी बड़े शान्त-सन्नाटे की साक्षी में महिला वर्ग बड़ी मुस्तैदी के साथ व्रज बनी देव-शक्ति की आराधना-आह्वान करती गीतों के माध्यम से उदयपुर में चुनौती दे रही हैं-

भागजा कोरोना थारो भारत में कई काम है
भागजा कोरोना थारो मेवाड़ में कई काम है
उदैपर में कई काम थारो मुल्लातलाई कई काम है

उधर एक दूसरा समूह गारहा था-

कोरोना अब मत आइ जइयो
ज्यूं आयो ज्यूं भाग अठे ना मुंह बताइ जइयो....

मेहता बने डेवलपमेंट काउंसिल फोर पल्प, पेपर एंड अलाइट इंडस्ट्रीज के चेयरमैन

उदयपुर (विज्ञप्ति)। जेके पेपर लिमिटेड के प्रेसिडेंट व डायरेक्टर बड़ीसादड़ी निवासी ए.एस मेहता को भारत सरकार के डेवलपमेंट काउंसिल फोर पल्प, पेपर एंड अलाइट इंडस्ट्रीज का चेयरमैन नियुक्त किया गया है।

यह आदेश वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय की ओर से जारी किया गया है। इस प्रतिष्ठित पद पर श्री मेहता की नियुक्ति से उदयपुर में हर्ष का माहौल है।

यह संस्थान देश में पेपर, पल्प व उससे संबंधित सभी मामलों में निर्णय लेने वाली देश की सर्वोच्च संस्थान है। यह काउंसिल पेपर एण्ड पल्प तथा अन्य सम्बंधित इंडस्ट्री के विकास तथा तकनीकी आविष्कार के क्षेत्र में कार्य करेगी। श्री मेहता का कार्यकाल दो वर्ष का होगा।

कोरोना और घरेलू नुस्खे

-डॉ. वेदप्रताप वैदिक-

भारत की केंद्रीय सरकार और प्रांतीय सरकारें जिस मुस्तैदी से कोरोना-युद्ध लड़ रही हैं, वह हमारे सारे दक्षिण एशिया के राष्ट्रों के लिए अनुकरणीय है। मुझे खुशी है कि अब हमारे सरकारी टीवी चैनलों ने शरीर की प्रतिरोध-शक्ति बढ़ानेवाले घरेलू नुस्खों का प्रचार शुरु कर दिया है।

यह बात मैं तालाबंदी की घोषणा के पहले से लिख रहा हूं और टीवी चैनलों पर बोल रहा हूं। मेरे पारिवारिक सदस्यों और मुझे फोन करनेवाले सभी मित्रों से मैं कह रहा हूं कि आप काढ़ा बनाइए। उसमें अदरक, निंबू, तुलसी, हल्दी, दालचीनी, काली मिर्ची, गिलोय, नीम, जीरा, शहद आदि डालकर खूब उबालिए। फिर घर के सभी सदस्यों और नौकरों-चाकरों को आधा-आधा कप पिला दीजिए।

यह काढ़ा किसी भी संक्रामक जीवाणु से लड़ने में आपकी मदद करेगा। वह कोरोना हो या उसका बाप हो। इससे आपको किसी भी प्रकार की हानि तो हो ही नहीं सकती। इसी आधार पर मेरा अंदाज है कि भारत में कोरोना उसी तरह नहीं फैल सकता, जैसा कि वह इटली, फ्रांस, अमेरिका और स्पेन में फैला है।

इन देशों में पिछले पचास साल में कई बार जाकर मैं रहा हूं। इन देशों के खाने में हमारे मसालों का उपयोग नहीं के बराबर होता है। हमारे मसाले ही हमारी औषधि हैं। हमारे गांवों के गरीब और आदिवासी भी इन मसालों से भली-भांति परिचित हैं। इन्हें घरेलू नुस्खे कहा जाता है।

मुझे खुशी है कि केरल से कश्मीर तक सारी सरकारें बाहरी मजदूरों के खाने और रहने के इंतजाम में पूरी तरह जुटी हुई हैं लेकिन इसके बावजूद वे हजारों की संख्या में अपने गांवों की तरफ भाग रहे हैं। वे सिर्फ खाने और सोने के लिए ही नहीं, अपने परिजनों के साथ यह डरावना समय बिताने के लिए भाग रहे हैं। इसीलिए मैंने कहा था कि सिर्फ तीन दिन के लिए इन लगभग पांच करोड़ प्रवासी मजदूरों को रेलों और बसों की सुविधा दे दी जाए। कुछ मुख्यमंत्रियों ने इस सुझाव पर अमल करना शुरु भी कर दिया था। अब ये लोग पुलिस के डर के मारे शहरों में ही टिके रहेंगे। पता नहीं, अब क्या होगा? सरकार ने यह बड़ा जुआ खेल लिया है।

केंद्र सरकार ने यह अच्छी घोषणा कर दी कि यह तालाबंदी तीन महिने के लिए नहीं है। इसी डर के मारे लोग अपने गांवों की तरफ भाग रहे थे और सर्वत्र जमाखोरी शुरु हो गई थी। यदि हमें कोरोना को हराना है तो लोगों के दिल से डर को पहले हटाना है।

डीएस ग्रुप द्वारा जल भंडारन एवं पूनर्भरन क्षमता का विस्तार

उदयपुर (विज्ञप्ति)। डीएस ग्रुप की महत्वाकांक्षी परियोजना 'वाटर इकोनॉमिक जोन' की शुरूआत वर्ष 2018 में वर्ल्ड वॉटर डे के अवसर पर की गई, जो कि उदयपुर जिले के अलसीगढ़ और कुराबड़ के 11,385 हेक्टेयर क्षेत्र में विस्तृत है और इसका लक्ष्य 26 गांवों के 24,000 लोगों तक पहुंचने का है। कम्पनी द्वारा 5,316 हेक्टेयर भूमि को उपचारित कर 9.64 लाख

क्यूबिक मीटर जल भंडारण और पुनर्भरण क्षमता तैयार कर चुकी है।

डीएस ग्रुप एक जल संवेदी संगठन है। कम्पनी ने अपने बिजनेस फिलोसॉफी और लोकाचार के लिए जल संरक्षण को प्रमुख बनाया है। इसी का नतीजा है कि जल संरक्षण इसकी कॉरपोरेट सामाजिक भागीदारी (सीएसआर) के एक प्रमुख ध्यानाकर्षण क्षेत्रों में से एक रहा है।

डीएस ग्रुप ने अपनी पहली जल संरक्षण संयन्त्र परियोजना सीकर में वर्ष 2013 में शुरू की तब से लेकर अब तक इसने सीकर जिले के दीपावास, मोकावास और अजीतगढ़ गावों में 23 चेक डेम्स का निर्माण किया। कम्पनी ने बुंदेलखण्ड में महोबा और बांदा में जल संरक्षण परियोजनाएं भी विकसित कीं इसके अलावा डूंगरपुर में सुरता, करौली, उदयपुर, कुराबड़ और अलसीगढ़, सीकर में दीपावास, मोकलवास और अजीतगढ़ में समूह की जल संरक्षण परियोजनाएं विकसित कीं हैं।

डीएस ग्रुप राजस्थान में पहले ही करीब 20,83,855 घनमीटर पानी संरक्षित कर चूका है जोकि 33,000 लोगों के जीवन को लाभान्वित कर रहा है। केन्द्रीय जल आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत को अधिकतम 3,000 बिलियन क्यूबिक मीटर पानी की जरूरत हर साल होती है जबकि वर्षा से इसे 4,000 बिलियन क्यूबिक मीटर जल प्राप्त होता है। लेकिन देश की क्षमता सालाना वर्षा जल के संरक्षण की क्षमता केवल 8 प्रतिशत ही है, जिसे विश्व की सबसे कम क्षमता कहा जा सकता है।

राजस्थान में पानी की कमी सबसे बड़ी समस्या है। इसमें 13.88 प्रतिषत भारत का कृषि योग्य क्षेत्र, 5.67 प्रतिशत जनसंख्या और देश का लगभग 11 प्रतिशत पशुधन है, लेकिन इसमें केवल 1.6 प्रतिशत सतही जल और 1.70 प्रतिशत भूजल है। जल संरक्षण परियोजनाएं राज्य में सामाजिक और आर्थिक स्थितियों में काफी सुधार करती हैं।

डीएस ग्रुप की सभी इकाइयों में रिसाइकिल रीयूज एवं रिचार्ज की फिलोसॉफी को अपनाया जा रहा है। रिसाइकिलिंग और रीयूज एवं रिचार्ज के कारण आज डीएस ग्रुप 301,644 किलो लीटर पानी फ्लशिंग, बागवानी और सिंचाई के लिए उपयोग कर पा रहा है। करीब 91,400 किलो लीटर पानी तालाबों से एकत्र किया जाता है। केंद्रीय जल आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, भारत 2050 तक लगभग 1.66 बिलियन की आबादी तक पहुंच जाएगा। भोजन की वार्षिक आवश्यकता भी 250 मिलियन टन से अधिक होगी। इसका मतलब पानी की मांग में काफी वृद्धि होगी।

सूरज बुलाता है

-मधुकर गौड़-

फिर अंधेरा
मुस्कराकर
गीत गाता है,
मुठ्ठियां
बांधों चलो
सूरज बुलाता है।
हो गये
इतने शिथिल
कि मांग भी
सकते नहीं,
धुप्प अंधेरा
हो गया है
जाग भी
सकते नहीं,
कब तलक संबंध
रखने को रहेंगे
विश्वास ही जब आदमी का
टूट जाता है
मुठ्ठियां
बांधों चलो
सूरज बुलाता है।

अजब-गजब विचित्र विवाह

(1) पैर कटवाकर विवाह :

अमेरिका में एक युवक एण्ड डेटन ने अपने प्रेम विवाह को मंजिल तक पहुंचाने के लिए अपना पैर ही कटवा डाला। वह एक सुन्दर युवती डेटन माई आर्नले से प्रेम करता था। उसका झुकाव भी डेटन की तरफ था। आर्नले का एक पैर बचपन के किसी हादसे के कारण काटना पड़ा था। आर्नले का पिता यह नहीं चाहता था कि डेटन को अपाहिज पत्नी का भार वहन करना पड़े। डेटन एक सर्जन के पास गया और अपनी एक टांग को कटवा लिया ताकि वह भी आर्नले के समान हो जाए। इस पर आर्नले के पिता ने अपनी बेटी को अस्पताल ले जाकर विवाह सम्पन्न कराया।

(2) निशाना दाग विवाह :

बेलेशिन्या स्पेन का एक युवक बन्दूक का कुशल निशानेबाज था। उसके मन में विवाह करने की उमंग उठी। संयोग से उसे स्पेन की एक लड़की से प्रेम हो गया। प्रतिदिन शाम को वह उस लड़की की खिड़की पर निशाना दागता। प्रेम ने विवाह का रूप ले लिया। उसने सगाई से पहले भी बन्दूक द्वारा छर्रे दागे, फिर कहीं विवाह हुआ।

(3) बोतल में बंद प्रेमपत्र से विवाह :

इंग्लैण्ड में एक नवयुवक मेहर विवाह तो करना चाहता था परन्तु उसके पसंद की कोई लड़की नहीं मिलती थी। इस उधेड़बुन में उसने एक प्रेमपत्र बोतल में बन्द करके समुद्र में बहा दिया। बोतल बहती हुई संयोगवश डेन्मार्क की एक युवती के हाथ लगी। उस युवती ने उस पत्र को उत्सुकता से पढ़ा और उसमें लिखे पते पर एक पत्र डाल दिया। मेहर ने तत्काल उसका उत्तर भेजा। दोनों ने एक-दूसरे के विवरण जानने में शीघ्रता दिखाई और धूमधाम से विवाह के बन्धन में बंध गये।

(4) बोतल में फोटू-पत्र से विवाह :

अमेरिका के एक सैनिक विल्सन की नियुक्ति एक निर्जन स्थान पर हुई। वहां सैनिकों के अलावा अन्य कोई व्यक्ति दूर-दूर तक नजर नहीं आता था। विल्सन के मन में विवाह का अंकुर फूटा। उसने यूं ही बोतल में अपना एक फोटो व पत्र लिखकर समुद्र में बहा दिया। तीन महीने के पश्चात वह पत्र इंग्लैण्ड की एक टाइपिस्ट मिस पोला जोनिंग को मिला। उसे विल्सन का चित्र बहुत आकर्षक लगा। वह विल्सन के पास पहुंच गई और उससे विवाह कर लिया।

(5) मासिक स्त्राव के कारण विवाह :

इटली के आदिवासी बहुल इलाके सेंतारी में जब लड़की को मासिक स्त्राव प्रारम्भ हो जाता है तो उसके बाहर आने-जाने पर कोई रोक नहीं लगाई जाती। वह लड़की किसी भी लड़के के साथ शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करने के लिए स्वतंत्र होती है। जिस लड़के के साथ शरीरिक सम्बन्ध बनाने के बाद उसे गर्भ ठहर जाता है, उसी के साथ उसका रिश्ता कायम कर दिया जाता है। इस प्रथा को 'मानलान' कहा जाता है।

(6) केले के गुच्छे में छिपे पत्र से विवाह :

जमैका के एक किसान का विवाह केले के गुच्छे के माध्यम से सम्भव हुआ। किसान आकर्षक युवक था। केले की खेती करता था। जिसे वह पसंद करता लड़की नापसंद कर देती थी। इस उधेड़बुन में उसने एक अज्ञात लड़की के नाम लम्बा-चौड़ा पत्र लिख डाला। इस पत्र को केले के गुच्छे के अन्दर की ओर रखकर इस तरह बांध दिया कि वह बाहर से नजर न आए। देवयोग से वह गुच्छा इंग्लैण्ड की एक युवती के हाथ लगा। वह युवती विवाह तो करना चाहती थी परन्तु अभिव्यक्त नहीं कर पा रही थी। प्रेमपत्र देखकर वह भावविभोर हो उठी और उस किसान के साथ परिणय सूत्र में बंध गई।

(7) मृतक महिला से विवाह :

चीन में मान्यता है कि अविवाहित मरने पर परलोक बिगड़ जाता है। 67 वर्षीय लियान अविवाहित था। उसने शादी करने का मन बनाया। समस्या यह खड़ी हुई कि इस वृद्ध से शादी कौन करे? तब लियान ने एक मृतक महिला से विवाह किया। 165 डॉलर में मृतक महिला का शव खरीदा गया एवं विवाह क्रिया सम्पन्न की गई। बाद में शोकयात्रा के साथ शव को दफन किया गया।

(8) टेलीफोन पर निकाह :

भारतीय मूल का एक युवक अब्दुल कादिर लन्दन में रहता था। काफी समय बाद शादी करने की उस पर धुन सवार हुई। उसने टेलीफोन डायरेक्टरी की मदद से हैदराबाद की एक अपरिचित युवती नजमा से बातचीत की। फोन से एकबार बात करने में ही शादी तय हो गई। अनोखी बात तो यह रही कि काजी को बुलाकर टेलीफोन पर ही निकाह पढ़ा गया।

(9) पोते-पोती, नातिन की साक्षी में विवाह :

गुजरात के 75 वर्षीय लांबड़िया के मालवास निवासी गमना भाई सोलंकी ने 68 वर्षीय राजपुर निवासी बंजारीदेवी पारगी से विवाह किया। बंजारी कोटड़ा की सड़ा पंचायत के राजपुर गांव की है। दोनों दम्पत्ती के पांच पुत्र और दो पुत्रियां हैं। ये दम्पत्ती अब तक लिव इन रिलेशनशिप में रह रहे थे। इस विवाह के गवाह पुत्र-पुत्रियां, पोते-पोती, नातिन बने। जनजाति में प्रचलित प्रथा के अनुसार जोड़े कई सालों तक लिव इन रिलेशनशिप में रहते हैं। बेटे-बेटी और पोते-पोती होने के बाद सामाजिक रस्म के अनुसार शादी बाद में करते हैं। क्षेत्र में स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा भी कई जोड़ों की सामूहिक शादियां भी कराई गई हैं।

-क्रमशः (कार्यालय संवाददाता)

खोज-खबर : डॉ. महेंद्र भानावत

(1) उदयपुर में भूतों, दैत्यों के किस्से

मैं सन् 1958 में उदयपुर आया। तब से अब तक अनेक लोगों के सम्पर्क में आया। इनमें सभी जाति, वर्ण, धर्म, संप्रदाय तथा मान्यताओं के लोग हैं। कई देवी-देवताओं के यहां स्थान हैं। मन्दिर, देवरे, स्थानक हैं। कई रूंख ऐसे हैं जिनके नीचे देवताओं के निवास हैं। रूंख स्वयं देवी-देवताओं के वास हैं। यहीं भूत महल है। दैत्य मगरी है।

भूत महल और दैत्य मगरी नाम से तो अब पूरी बस्ती-क्षेत्र ही बन गया है। पहले मुख्य शहर एक विशाल परकोटे में बंधा हुआ कैद था। जगह-जगह पोलें थीं जो समयबद्ध थीं। पोल रक्षक ठीक समय उन्हें खोलता और बन्द कर देता।

बड़ी सुरक्षा थी। शहर तो धीरे-धीरे बाद में बसा। बसावट की स्थिति और अलियों, गलियों, घाटियों, टेकरियों, ओलों, पोलों, खुर्रों, घाटों, सहेरियों, बाड़ियों, चोहट्टों, मठों जैसे विविध नामों से बसे यह शहर बड़ा ही सौंदर्यजीवी नक्श लिये पूरे विश्व का नाक बना हुआ है।

दृश्य जगत तो सबको ही दिखाई दे रहा है पर अदृश्य ताकतों का भी यह शहर भंडारण है। हर कोई इससे परिचित है। अनेक झाड़ागर, भोपे, तांत्रिक, पराविद्या विशारद, साधक, झाड़फूंक करने वाले, नुगरी आत्मा के पहचानक, दिव्यात्मा धारक, ताबीजी, टोटकेबाज, जाने अनजाने, रहस्यमय रूप लिये जादूगरी करने वाले भी मिल जायेंगे।

यहां कुछ स्थान ऐसे थे जहां ठीक समय कोई न कोई अदृश्य शक्ति महसूस की जाती। अकाल मृत्यु प्राप्त सगसजी के छोटे-बड़े कई स्थान हैं। जगह-जगह भैरूजी, शिवजी के प्रतीक स्थल मिल जायेंगे। भूत, प्रेत, जिन्न की हलचल भी महसूस करने वाले मिले।

दूधतलाई पर दिन को दो बजे अचानक क्षण भर के लिए सन्नाटा छा जाता। वहां बड़ के नीचे कटे सिर का भूत रहता सुना। मालदास स्ट्रीट में बारह से दो बजे के बीच कुछ अजीब हरकत लोगों ने सुनीं। पंचायती नोहरे के वहां जमना हलवाई की सारी जलेबी रात को बिक जाती। कोई घुघरू की आवाज सुनी। सिंधी सरकार की तथा बदनौर की हवेली के वहां भी रात को सवारी निकलती। कलवा बच्चा होता है। सात मास्या बच्चे को गड़ा हुआ निकाल वश में करते हैं।

सुना यह भी कि डाकण, चुड़ैल, कलवा होते हैं। मृत महिला डाकण होती है। लाखों में एक आध जीवित भी होती है। यह जो कहती है, सत्य घटित होता है। यह औरत को ही लगती है, ईर्ष्या, जलन वश।

इसे भगाने के लिए मुर्गे की बीट (कलेजी, गुर्दा, फेंफड़ा या दिल) इस पर उतार सुनसान जगह फिंकवा देते हैं।

ये सब बातें चालीस वर्ष पूर्व की हैं। ज्यों-ज्यों शहर विकसित होता है, बस्ती बदलती, बढ़ती, विकसित होती है त्यों-त्यों ये सब नुगरी-सुगरी, अच्छी-बुरी आत्माएं भी पलायन करती जाती हैं और सबकी उम्र होती है तब समाप्त भी हो जाती है। जिन लोगों से मैंने बहुत कुछ सुना वे भी अब नहीं रहे।

हां, मैंने जगह-जगह जो सुना, देखा, पूछा ताछा और निष्कर्ष निकाला, उसे लिखने का अवश्य प्रयत्न किया और जग जाहिर भी किया ताकि पता चले कि हमारे देश में, समाज में, अंचल और आसपास में कैसे-कैसे लोग हैं और वे किन-किन मान्यताओं, अनुभवों और आकांक्षाओं के साथ पीढ़ी-दर-पीढ़ी जीवित ढोते चलायमान होते हैं।

(2) भाटों की नौ कली

राजस्थान में रहने वाले भाट जाति के लोगों की नौ कली अर्थात् नौ जाति मानी गई है। लक्ष्मीनारायण राव 17 सितम्बर 2002 को मेरे निवास पर मिलने आए तो उनसे अनेक जानकारियां मिलीं। वे हर तरह की जानकारियों के खजाने थे।

आशु रचनाकार थे। ख्याल तमाशा करने वाले दलों के साथ भी रहे। प्रारम्भ में भारतीय लोककला मण्डल में भी रहे। वहां ढोलामारू, इन्द्रपूजा जैसी प्रारम्भ में बनी नृत्यनाटिकाओं में भी संगीत रचना की।

श्री राव ने बताया कि भाटों की 9 जातियों में खमणोरा, बागोरा, कापड़िया, केदारा, चंडीसा, साख, देसूंदी, राणीमंगा तथा हरबोला है। सुभद्राकुमारी चौहान की 'बुन्देलें हरबोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी' कथा सुनाने वाले हरबोलों ने ही झांसी की रानी लक्ष्मीबाई को सर्वाधिक लोकप्रिय बनाया था।

ये हरबोला सक्रांति पर पेड़ों पर चढ़कर भगवान का नाम लेते हैं। कावड़िया भाट की तरह सुबह जल्दी उठकर मांगने निकल जाते हैं। ये लोग-

लामड़ी कोटली लूमजा माई
मोल्या की वाटकी भरदे माई
ये ले भाई, चांलू भाई
पै'र रात का लेवे नाम
जै गंगा माई जै गंगा।

कहकर भिक्षा लेते हैं। कापड़िया भाट औरतों में मांगते हैं। उनसे कांचली कापड़ा लेते हैं। ये मुख्यत: जाट, गायरी तथा अहीरों में मांगते हैं। देसूंदी राजपूतों के भाट हैं। केदारा आड़ी जात के अलावा कुम्हारों, अहीरों, धोबियों तथा वैरागी साधुओं को भी मांगते हैं। बेकार, जैकार, भैकार, तंतकार के भाट नहीं होते। बेकार में राजपूतों के छोटी जात के होते हैं। जाटों के शंकर्या कलाकार जैकारों में सम्मिलित हैं। अहीरों के भैकार तथा गुजरों के तंतकार होते हैं।

ये चारों गाने-बजाने का काम करते हैं। कविताएं भी बोलते हैं पर कविता सुनाना पेशा नहीं है। ये धोबी-ढोली का नहीं लेते खाते हैं। सूअर का मांस नहीं खाते हैं। मुस्लिम धर्म पालते हैं।

शेयरदलोड का चौथा एडिशन लॉन्च

उदयपुर (विज्ञप्ति)। पिछले 5 वर्षों के दौरान, एरियल इंडिया ने घरेलू कार्यों के असमान वितरण को लेकर लोगों से लगातार संवाद किया है और अधिक से अधिक पुरुषों से शेयरदलोड के लिए आग्रह किया है। इस संवाद को जारी रखने और घरों के भीतर समानता के भाव को आगे बढ़ाने की पहल करते हुए, एरियल ने शेयरदलोड का चौथा एडिशन लॉन्च किया।

एक सर्वे में चौंकाने वाली और असहज करने वाली सच्चाई सामने आई कि भारत में 71 प्रतिशत महिलाएं घर के काम की वजह से अपने पति से कम सो पाती हैं। एरियल ने महसूस किया कि पुरुषों द्वारा काम के लोड को साझा नहीं करने का असर कहीं अधिक गहरा और मजबूत है। कपड़े धोने जैसे घरेलू काम का असमान विभाजन महिलाओं की पर्याप्त नींद और आराम करने के रास्ते में बाधक बन रहा है। पुरुष जब उनके काम के बोझ को साझा नहीं करते हैं, तो सबसे बुनियादी और रोजमर्रा की जो चीज सबसे ज्यादा प्रभावित होती है! वह है - नींद! महिलाओं की नींद का पूरा न होना घर के भीतर असमानता का एक संकेतक की तरह है। सभी सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफार्म्स पर लॉन्च की गई नई फिल्म, पत्नियों की भलाई के लिए पर घरेलू काम के असमान विभाजन के प्रभाव को उजागर करने का प्रयास करती है, और पुरुषों से इसको लेकर तत्काल कदम उठाने का आग्रह करती है। पिछले 5 वर्षों के दौरान, एरियल लाखों पुरुषों के विचार को प्रभावित करने में सक्षम रहा है। 2014 में 79 प्रतिशत पुरुष मानते थे कि कपड़े धोने का काम सिर्फ महिलाओं का है, उनकी संख्या में लगातार गिरावट आई है। आज भी सिर्फ 35 प्रतिशत पुरुष ही घर के काम में हाथ बंटाते हैं।

लॉकडाउन के दौरान कोरोना पर नि:शुल्क टेलीफोनिक परामर्श देंगे एक्सपर्ट डॉक्टर्स

उदयपुर (विज्ञप्ति)। वैश्विक महामारी घोषित हो चुके कोरोना वायरस के संक्रमण से अन्य लोगों को बचाने के उद्देश्य से जिला प्रशासन की पहल पर लॉकडाउन दौरान शहर के निजी चिकित्सालय के एक्सपर्ट डॉक्टर्स द्वारा आमजन को टेलीफोन पर कोरोना विषयक नि:शुल्क परामर्श प्रदान किया जाएगा।

जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी कमर चौधरी ने बताया कि कोरोना पर आमजन को नि:शुल्क टेलीफोनिक चिकित्सा परामर्श उपलब्ध करवाने हेतु जिला प्रशासन द्वारा निजी चिकित्सालयों एवं मेडिकल कॉलेज के साथ समन्वय कर विशेषज्ञ चिकित्सकों को नियुक्त किया गया हैं।

ये विशेषज्ञ चिकित्सक प्रतिदिन सुबह 8 बजे से रात्रि 8 बजे तक आमजन को कोरोना से सम्बन्धित परामर्श के लिए उपलब्ध रहेंगे। उन्होंने बताया कि जिला प्रशासन एवं उदयपुर शहर के गीतांजली मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल, पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल, जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल एवं पारस जे.के. हास्पीटल के सहयोग से चिकित्सकों द्वारा लॉक डाउन अवधि मे आम जनता को कोरोना से सम्बन्धित किसी भी समस्या के निराकरण के लिए सप्ताह के सातों दिन टेलीफोनिक परामर्श सेवा उपलब्ध करायी जायेगी।

कमर चौधरी ने बताया कि इसके तहत पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल के दूरभाष नंबर 0294-3920000 के साथ इसके चिकित्सक डॉ. पी.सी.जैन (9829055303), डॉ. एस. के. वर्मा (9414168910), डॉ. सुनील कुमार(7597930159), डॉ. रवि भाटिया (9928056404),डॉ. एस. एल. सोलंकी (7976756068), पारस जे. के. हास्पीटल के दूरभाष नंबर 0294-6669999, इसके चिकित्सक डॉ. संदीप भटनागर (9414167693), डॉ. नितिन कौशिक (9895966556), डॉ. चेतन गोयल (7042968510),डॉ. सी. पी. पुरोहित (9587509850),डॉ. मनोज अग्रवाल (9460697972), जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल के दूरभाष नंबर 0294-3056000 व 0294-3060600, गीतांजली मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल के दूरभाष नंबर 0294-2500044 तथा इसके चिकित्सक रवि-सोम-मंगल को डॉ. गौरव छाबड़ा (9001782375), बुध-गुरु को डॉ. ऋषिकुमार शर्मा (8769143269) तथा शुक्र-शनि को डॉ. अतुल लुहाड़िया (9982260458) कोरोना विषय पर नि:शुल्क परामर्श प्रदान करेंगे।

जेके टायर नेतृत्व टीम ने वेतन भुगतान में स्वैच्छिक कटौती की

उदयपुर (विज्ञप्ति)। भारत में रेडियल टेक्नोलॉजी में अग्रणी जेके टायर जिसने विविधकृत एवं बहुराष्ट्रीय उपस्थिति दर्ज की है। इसकी शीर्ष नेतृत्व टीम ने कोविड-19 महामारी की मार को देखते हुए अपने वेतन में स्वैच्छिक कटौती की घोषणा की है।

जेके टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लि. के चेयरमैन एवं प्रबन्ध निदेशक डॉ. रघुपति सिंघानिया ने बताया कि जेके टायर के अध्यक्ष और पूर्णकालिक निदेशकों ने अपने वेतन में 25 प्रतिशत की स्वैच्छिक कटौती की है और अन्य वरिष्ठ प्रबन्धन कर्मियों ने अपने वेतन में 15 से 20 प्रतिशत की कमी की है। वेतन कटौती इसके वैश्विक परिचालनों पर भी लागू होगी। टायर उद्योग मुश्किल दौर से गुजर रहा है और सप्लाई चेन में अपूर्व गिरावट और व्यवधान आ गया है। यह कोविड-19 महामारी के प्रभाव से बढ़ गया है। अनुमान है कि आगे स्थिति और बिगड़ सकती है।

डॉ. सिंघानिया ने कहा कि वर्तमान में हम अपूर्व मुश्किल दौर से गुजर रहे हैं। बिक्री और लाभ दोनों ही कोरोना वायरस के कारण प्रभावित हो रहे हैं। टीम जेके टायर इस चुनौतीपूर्ण स्थिति में विजेताओं के रूप में उभरने के लिए एक साथ है। इस महत्वपूर्ण समय में एकजुटता के प्रदर्शन के तौर पर यह अपने वेतन में कमी के लिए आगे आई है। इसके अलावा कम्पनी ने अपने कर्मचारियों और उनके परिवार जनों के सुरक्षा कल्याण सुनिश्चित करने के लिए भी अनेक विस्तृत कदम उठाए हैं।

द्विलिंगीय नवजात को दिया नवजीवन

उदयपुर (विज्ञप्ति)। प्रकृति की लीला बड़ी विचित्र अपरम्पार है किंतु विज्ञान भी अपनी खोज के लिए कम अचरज देने वाला नहीं है। दो सिर, दो धड़ और चार हाथ वाले शिशु के जन्म लेने के अजूबे तो हमने सुने हैं किंतु दो लिंगी नवजात होने की घटना भी उमरड़ा स्थित पेसिफिक इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस) में देखने को मिली।

पिड्रियाट्रिक सर्जन डॉ. प्रवीण झंवर ने बताया कि इस बीमारी को डाईफेलस के नाम से जाना जाता है। मेडिकल लिट्रेचर में अब तक ऐसे 100 केस ही रिपोर्टेड हैं। उसमें भी कम्प्लीट डाइफेलस के 20 से भी कम केस रिपोर्टेड हैं। इस बच्चे में तो डाइफेलस के साथ लेट्रिन का रास्ता भी नहीं है।

इस कारण उसका पेट फुल गया था। इससे दूध पिलाना भी संभव नहीं हो रहा था। ऐसे में उसकी इमरजेंसी सर्जरी कर लेट्रिन का बाईपास रास्ता (कोलोस्टोमी) बनाया गया। बच्चा अभी एक माह का हो चुका है। डॉ. प्रवीण ने माता-पिता को बच्चे की स्टेज्ड सर्जरी के बारे में समझाया और आश्वस्त किया है बच्चे को लेकर उन्हें चिंता करने की आवश्यकता नही हैं।

सुनील दुग्गल वेदांता के अंतरिम सीईओ नियुक्त

उदयपुर (विज्ञप्ति)। वेदांता लि. ने हिन्दुस्तान जिंक के सीईओ सुनील दुग्गल को वेदांता लि. के अंतरिम मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में नियुक्त किया है। श्रीनिवासन वेंकटकृष्णन व्यक्तिगत कारणों से 5 अप्रैल 2020 से कंपनी के सीईओ और निदेशक के रूप में पद छोड़ेंगे।

कंपनी के चेयरमैन नवीन अग्रवाल ने कहा कि वेंकट कंपनी को चलाने के लिए अपने अथक प्रयास के अलावा सस्टेनेबिलिटी का नेतृत्व करने में सबसे अग्रणी रहे हैं। उन्होंने कंपनी में मानदंड स्थापित किये है।

नवीन अग्रवाल ने कहा कि हम अंतरिम मुख्य कार्यकारी सुनील दुग्गल का गर्मजोशी से स्वागत करते हैं जो परिपक्व और प्रमुख नेतृत्व में हमेशा से सफल साबित रहे हैं और कंपनी को और अधिक ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए तत्पर हैं।

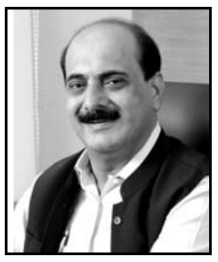

बोर्ड ने अनिल अग्रवाल को वेदांता लिमिटेड के गैर-कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया। नवीन अग्रवाल बोर्ड के कार्यकारी उपाध्यक्ष होंगे। कंपनी को एक प्रबंधन समिति द्वारा संचालित किया जाएगा जिसमें सीईओ, सीएफओ, सीएचआरओ और सीसीओ शामिल हैं जो अध्यक्ष के मार्गदर्शन में सामूहिक रूप से सभी महत्वपूर्ण निर्णय लेंगे। सुनील दुग्गल हिन्दुस्तान जिंक के सीईओ और निदेशक के रूप में अपनी वर्तमान भूमिका के साथ-साथ अंतरिम सीईओ वेदांता लिमिटेड के रूप में अतिरिक्त कार्यभार संभालेंगे। सुनील 36 वर्षों के समृद्ध और विविध नेतृत्व का अनुभव रखते हैं एवं पिछले 10 वर्षों से वेदांता समूह से जुड़े हुए हैं। उन्होंने पूर्व में अंबुजा सीमेंट के साथ काम किया है।

अपनी इस नियुक्ति पर सुनील दुग्गल ने कहा कि मैं इस नियुक्ति के लिए कंपनी का कृतज्ञ हूं। मुझे विश्वास है कि वेदांता अपने विकास की गति के माध्यम से हमारे देश की आर्थिक प्रगति में आगे भी योगदान करती रहेगी। मैं इसे और अधिक मजबूत करने के लिए कटिबद्ध रहूंगा।

नारायण सेवा संस्थान द्वारा मास्क, भोजन, अन्न सामग्री वितरित

उदयपुर (विज्ञप्ति)। कोरोना महामारी के चलते लॉकडाउन होने पर सुबह कमाई कर शाम को चूल्हा जलाने वाले लाखों गरीब परिवारों के जीवन में संकट आ गया जिसे देखते हुए नारायण सेवा संस्थान ने वंचित व्यथित लोगों को मदद पहुचाने की ठानी है।

संस्थान संस्थापक कैलाश मानव और अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि संस्था लगभग एक सप्ताह से गरीब, वंचित, निर्धन, दीन और पशु पक्षियों को मदद पहुंचाने में लगी है और आगे भी किसी तरह की कमी छोड़ेगी। हर स्थानीय निर्धन की सहायता करकर समाज को बचाएंगे। निदेशक वंदना अग्रवाल ने कहा कि गरीबों के सेवार्थ 5-5 सदस्यों की 10 टीमें भोजन, राशन, मास्क बांट रही है। घर-घर, दुर्गम क्षेत्रों, कच्ची बस्ती, रेन बसेरों में इंसानियत का धर्म निभा रहे है। दिनेश वैष्णव, अनिल आचार्य, प्यारचंद, जगदीश सहयोग दे रहे हैं।

चित्तौड़ के किले पर.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

रास्ते में एक क्षण को मुझे लगा कि जैसे मैं भी हवा में बह गया हूं पर दूसरे ही क्षण में अपनी सही स्थिति में आ गया। मोती बाजार पहुंचते-पहुंचते एक ट्रक सामने आती हुई मिली। मानसिंहजी ने मुझे बताया कि ट्रक में बैठे आदमियों में से दो भूतों की झपट में आ जायेंगे। सुबह सुन लेना कि दो के कलेजे चले गये।

इस बार मुख्य दरबार जुड़ा कुंभा महल में। वैसे प्रतिवर्ष पद्मिनी महल में जाजम बिछती है। आम दरबार जुड़ता है वैसा ही जैसा चित्तौड़ में राणाओं के समय जुड़ता रहा। एक-एक पंक्ति में 6-6 बैठकें रहती हैं। सब अपनी-अपनी जगह, अपनी हैसियत के अनुसार बैठते हैं। सरदार, उमराव, ठाकुर, महाराणी, ठुकराणी, दास, दासी, नौकर, चाकर सब उसी तरह के ठाठ, सारा राजसी रंग-ढंग। यह मेला भरता है दो-ढाई घण्टे के लिए। वे ही सब दुकानें जो तब लगा करती थीं। अकाल मृत्यु में जो खो गये उन सबका मिलन मेला है यह। इस मेले में सबसे ज्यादा मिठाइयां बिकती हैं। भेष बदल-बदल कर आदमी वेश में ये लोग जाते हैं और मणोंबंध मिठाइयां खरीद लाते हैं।

चित्तौड़ के किले पर कुल सत्रह जौहर हुए। तीसरे जौहर के बाद संवत् 1702 में यह अदृश्य मेला प्रारम्भ हुआ। अकाल मृत्यु प्राप्त कर जो जीव इधर-उधर भटक गये उनसे आपसी मेलमिलाप हेतु प्रतिवर्ष दीवाली को इसका आयोजन रखा गया। कई राजपूतों के बालक मुसलमानों के हाथों चले गये जो मुसलमान बना दिये गये परन्तु उनकी खांपें मुसलमानों में अभी भी उनकी साक्षी हैं। चुहाण, सिसोदिया, राठौड़, डोड्या ये सब खांपें राजपूतों की हैं जो आज मुसलमानों में भी पाई जाती हैं। इन खांपों के लोग मूलतः राजपूत रहे हैं। सांईदास, ईसरदास और बीसमसिंह तो बड़े जबरे वीर थे। इन तीनों ने मिलकर 50 हजार दुश्मनों का सफाया कर दिया। एक ही तलवार से साढ़े तीन सौ का खेल खत्म कर दिया। जयमलजी तो सारे युद्ध का संचालन करते थे। उन जैसा युद्धवीर रणबाज दूसरा नहीं हुआ। उनमें दस हाथियों जितना बल था।

चित्तौड़ की चप्पा-चप्पा भूमि की अखूट गौरव-गाथा है। मेरे लिए तो सबसे बड़ी यही उपलब्धि रही कि मैं इस अदृश्य मेले के अलौकिक रहस्य को अपना दृश्य बना सका, अपनी दृष्टि दे सका। यह मेला मेरे लिए तो गूंगे का गुड़ ही बना हुआ है। कल्लाजी बावजी ने यह कृपा केवल मेरे पर की तो मैंने यह ठीक समझा कि इसका जायका वे लोग भी लें जो कभी इसे साक्षात् सम्भव हुआ नहीं मान सकेंगे, केवल सुन अवश्य सकेंगे। जब-जब भी वे चित्तौड़ आयेंगे कि यहां प्रतिवर्ष भूतों का मेला दीवाली की गहन रात को लगता है परन्तु जिसका कोई साक्षी नहीं हो सकता।

शाही ठाठ से.....

(पृष्ठ आठ का शेष)

इनमें कहा जाता है कि सहेलियां इस वर्ष तो हिलमिल कर मौजमस्ती से गणगौर मना लें, अगले वर्ष पता नहीं क्या संयोग बैठे कि सब साथ मिलकर यह उत्सव न मना पायें। कारण स्पष्ट है, जब विवाह सूत्र में बंध जाएंगी तो मिलना संभव नहीं होगा।

घूमर नृत्य :

राजस्थान में जयपुर, कोटा, बूंदी, जैसलमेर, उदयपुर, बीकानेर की घूमर बड़ी नामी रही है। राजपरिवारों की घूमर अपने विशिष्ट लहजे पहनावे तथा ठसक के कारण अपना अलग वैशिष्ट्य लिए होती है। इसका मुख्य वाद्य ढोल है। सहायक वाद्य के रूप में बांकिया भी बजाया जाता है।

घूमर नाचने वाली महिलाएं विविध भांति की घूमरें लेती हैं। एक प्रकार तो वह जिसमें गोलाकार घूमती हुई महिलाएं अपने हाथों से तालियां बजाती रहती हैं। दूसरा प्रकार डंडों वाली घूमर का है। इसमें नाचने वाली अपने ही हाथों के डंडे आपस में टकरात हुई नाचती हैं और दोनो ओर की पासवाली के डंडों से अपने डंडे मिलाती हुई खेलती हैं। तीसरे प्रकार की घूमर में डंडों का प्रयोग नहीं होता। नाचते समय अपने हाथों को उठाती हुई ऊंगलियों द्वारा नाना भाव व्यक्त करती हैं। इन घूमरों में अलग-अलग गीतों का प्रयोग होता है।

गणगौर पूजने वाली लड़कियां और महिलाएं घूमर नाचने के लिए घेरा बनाकर खड़ी हो जाती हैं। वे झुकती हुई, अपने हाथों से ताली बजाती हुई नृत्य करती हैं। कभी-कभी युगल रूप में एक दूसरे का कैंचीनुमा हाथ पकड़, अपने पांवों को एक दूसरे से समीप लाकर खींचे हुए हाथों से शरीर को धनुषाकार देती हुई चकरी लेती हैं और सम पर पुनः पूर्व स्थिति ग्रहण करती हैं। घूमर का कोई सा प्रकार हो, गोलाकार घूमना जरूरी होता है।

कवि पद्माकर द्वारा गणगौर दर्शन :

राजस्थान का गणगौर का त्यौहार अन्य प्रान्तों में भी बड़ा लोकप्रिय हुआ। इसे देखने बाहर से भी कई विशिष्ट लोगों का उदयपुर आना-जाना होता रहा। महाराणा भीमसिंह के समय महाकवि पद्माकर गणगौर की सवारी देखने आये। इस सवारी का उनके दिल पर बड़ा अमिट प्रभाव पड़ा। फलस्वरूप उन्होंने दो पदों की रचना की।

एक पद की यह पंक्ति-गौरन में कौनसी हमारी गणगौर है, आज भी साहित्य की अमर थाती बनी हुई है। मेवाड़ में गणगौर की तरह महिला को भी गणगौर का सम्बोधन दिया जाता है। पुरूष अपनी सहधर्मिणी को भी गाणगौर कह कर पुकारता है। इस सम्मानसूचक संबोधन से कवि पद्माकर बड़े चकित और उतने ही प्रभावित हुए इसीलिए उन्होंने उक्त पंक्ति में त्यौहार वाली गणगौर के साथ-साथ घरवाली गणगौर का अनुप्रास युक्त उल्लेख किया।

जार सदस्यों को मास्क व सेनेटाइजर वितरित

उदयपुर (कार्यालय संवाददाता)। जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) की उदयपुर इकाई की ओर से सदस्यों को मास्क व सेनेटाइजर का वितरण किया गया। जार उदयपुर इकाई के अध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत ने बताया कि मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. दिनेश खराड़ी ने जार पदाधिकारियों को मास्क व सेनेटाइजर वितरित किए।

इस अवसर पर डॉ. खराड़ी ने कहा कि पत्रकारों का कार्यक्षेत्र बहुत ही विस्तृत है और वे सबसे ज्यादा पब्लिकली एक्सपोज होते हैं। कोरोना वायरस (कोविड-19) संक्रमण के खतरों को देखते हुए उनकी सुरक्षा का जो जिम्मा जार ने उठाया है वह काबिले-तारीफ है।

जार अध्यक्ष डॉ. भानावत ने बताया कि जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान की उदयपुर इकाई हमेशा पत्रकारों के हितों में कार्य करती रही है। इसी क्रम में बुधवार को पत्रकारों के स्वास्थ्य को देखते हुए मास्क एवं सेनेटाइजर वितरण का कार्यक्रम रखा गया। इससे पूर्व सड़क एवं यातायात सुरक्षा को देखते हुए सभी जार सदस्यों को हेलमेट भी वितरित किये जा चुके हैं। महासचिव अजय आचार्य ने कहा कि पत्रकार मास्क लगा कर अपने कर्तव्यों का निर्वहन करेंगे तो सुरक्षा के साथ ही समाज में भी संदेश जाएगा कि कोरोना वायरस से सबको मिलकर लड़ना है। आखिकार पत्रकार भी उसी समाज से आते हैं जहां पर इन दिनों इस वायरस के सामुदायिक स्तर पर संक्रमण को रोकने की जबर्दस्त जद्दोजहत चल रही है।

मास्क व सेनेटाइजर वितरण के दौरान जार पदाधिकारियों में सुमित गोयल, संजय खाब्या, कपिल श्रीमाली, डॉ. रवि शर्मा, पवन खाब्या, प्रकाश शर्मा, अल्पेश लोढ़ा, भूपेन्द्रकुमार चौबीसा, पंकजकुमार शर्मा, विष्णु शर्मा 'हितैषी', राजेन्द्र हिलोरिया, शैलेष नागदा, प्रकाश मेघवाल, राजेन्द्रकुमार पालीवाल, युनुस खान, पूजा दवे भी उपस्थित थे।

जोशी ने लिया कोरोना से निपटने की व्यवस्थाओं का जायजा

उदयपुर (विज्ञप्ति)। मावली विधायक धर्मनारायण जोशी ने मावली के उपखण्ड अधिकारी रमेश सिरवी पुनाड़िया के साथ बैठक करके कोरोना (कोविड 19) से उत्पन्न स्थिति में नागरिकों के स्वास्थ्य रक्षा, रसद वितरण आपात स्थिति से निपटने की वैकल्पिक व्यवस्थाओं पर चर्चा की। इसके बाद जोशी ने राजकीय चिकित्सालय फतहनगर, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मावली, सनवाड़, खेमली व प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र घासा का दौरा किया।

जोशी ने सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मावली, खेमली, सनवाड़ राजकीय चिकित्सालय फतहनगर व प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र घासा के प्रभारियों के साथ बैठक कर आवश्यक चिकित्सा सुविधा पर भी चर्चा की। जोशी ने प्रभारियों की मांग पर विधायक मद से आवश्यक उपकरण क्रय करने की स्वीकृति का भी आश्वासन दिया।

विधायक जोशी नगरपालिका फतहनगर सनवाड़ के कन्ट्रोल रूम पर भी गये और वहां प्रभारी अधिकारी से व्यवस्थाओं की जानकारी ली। विधायक जोशी ने पलाना कलां में सरपंच नीतू जैन व युवा मोर्चा नेता मदन जाट व फतहनगर में मण्डल अध्यक्ष नीतिन सेठिया से मिलकर पैकेट वितरण व्यवस्था की जानकारी ली।

जोशी पुलिस थाना घासा, मावली व फतहनगर में पुलिस थाने के स्टाफ से मिले और उनका भी आभार व्यक्त किया।

जोशी ने इस विषम दौर में चिकित्सा, पुलिस, सफाई व मिडियाकर्मियों सहित आवश्यक सेवा से जुड़े सभी लोगों व स्वंयसेवी संस्थाओं का आभार व्यक्त किया। विधायक जोशी के साथ खेमली में भाजपा नेता देवीलाल डांगी व विजयप्रकाश विप्लवी, घासा में मण्डल अध्यक्ष गणेशलाल कुम्हार व दुर्गाशंकर पुरोहित, मावली में सरपंच हेमेन्द्र जाट व भाजयुमो महामंत्री मनोज पुजारी, फतहनगर व सनवाड़ में जिला मंत्री गणपतलाल स्वर्णकार, मंडल अध्यक्ष नितिन सेठीया, वरिष्ठ पार्षद कल्याणसिंह पोरवस्ता व गोवर्धन सोनी उपस्थित थे।

धत्तेरे की

कसी पैठ ही
नागौ वेइग्यौ
धत्तेरे की।
चार-चार पीढ़ी री
सीढ़ी चढ़गी कीड़ी
ऊंचो माथो करनै बोली
हाथी बणगी।
ज्यूं जड़ाव री टोपी फ्हैर
ऊंदरो ग्यौ रावळै परो
बोल्यो, ऊंची एड्यां करनै
रावजी री आंख्यां तणगी।
कठै भोज राज सूं
तुलना करौ धूळ धोया की।
धत्तेरे की।
लापौ देइनै लाल राखण्या गाळ
मिलैळा जगै-जगै पर
हम चौड़ा बाजार संकड़ा कै
पोमावै जर-जर कंथा
नकळी राखै मूंछ
होड़ करै धन्ना की।
धत्तेरे की।
बागां घूमै बाघ बण्या रै
छम्मक छैला
घर में करै ऊंदरा ग्यारस
पण छतरी ज्यूं तण्या फिरै
अनोखा कंवरजी अलबेला
फटक दीवाल्या
लालटेण री बाती ज्यूं भभकै
कूकर री सीटी ज्यूं
मरोड़ डोफर्‌या की।
धत्तेरे की।

- डॉ. महेन्द्र भानावत

शब्द रंजन के लिए कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं व समाचार ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

शाही ठाठ से निकलती गणगौर की सवारियां

-डॉ. महेन्द्र भानावत-

सुख, सुहाग एवं समृद्धि की कामना के लिए गणगौर का त्यौहार मनाया जाता है। उदयपुर में आजादी पूर्व महाराणा की भव्य सवारी निकलती थी। राजपरिवार के साथ विभिन्न समाजों की गणगौरें पिछोला के किनारे त्रिपोलिया पर पहुंचती थी। त्रिपोलिया वाला घाट आगे जाकर गणगौर घाट के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस घाट के किनारे महिलाएं अपने-अपने समाज की गणगौरों की पूजा करती हैं और उनके सामने बड़ा ही मनमोहक घूमर नृत्य करती हैं। महाराणा सज्जनसिंह ने इस अवसर पर पहली बार नाव की सवारी प्रारंभ की जिसका जिक्र महिलाओं द्वारा गाये जाने वाले घूमर गीतों में मिलता है- हेली नाव री असवारी सज्जन राण आवे छै अर्थात हे सखी, नाव की सवारी किए राणा सज्जनसिंह आ रहे हैं।

आजादी के बाद राजपरिवार द्वारा गणगौर की सवारी बंद हो गई किन्तु विभिन्न समाजों द्वारा गणगौर की सवारी आज भी बदस्तूर जारी है। इस बीच सरकार के पर्यटन विभाग द्वारा पिछले कुछ वर्षों से यह उत्सव मेवाड़ महोत्सव के नाम से प्रारंभ किया गया। यह महोत्सव तीन दिन का होता है। इसमें विभिन्न समाजों की गणगौरों में से प्रथम,द्वितीय तथा तृतीय आने वाली श्रेष्ठ गणगौर को पुरस्कृत किया जाता है। इस अवसर पर श्रेष्ठ विदेशी दम्पत्ति का चयन कर उसे पुरस्कृत किया जाता है। उदयपुर से 22 किलोमीटर दूर आदिवासी जन जीवन के लिए गोगुन्दा में गणगौर का उत्सव मनाया जाता है। रात्रि को मेले के रूप में आसपास के गांवों से सैंकड़ों की संख्या में नाचते-गाते आदिवासियों का रेला उमड़ पड़ता है।

उदयपुर की गणगौर :

ऐसा कहा जाता है कि यहां के राजघराने से संबंधित वीरमदास की गणगौर नामक एक बहुत ही सुन्दर कन्या थी जिसे चाहने वाले कई राव रईस थे। बुंदी के ईसरसिंह के साथ जब उसका संबंध कर दिया तो कइयों को ईर्ष्या हुई और वे गणगौर को प्राप्त करने में लग गए। इस बात का पता जब ईसरसिंह को लगा तो वह उदयपुर आया और अपने घोड़े पर गणगौर को बिठाकर चलता बना। कहते है मार्ग में चम्बल नदी पूरी वेग के साथ बह रही थी। ईसरसिंह ने अपना घोड़ा उसमें छोड़ दिया। परिणाम यह हुआ कि नदी डोड़े सहित ईसरसिंह और गणगौर को ले भागी। इस संबंधी यह गीत आज भी सुनने को मिलता है-

उदियापुर से आई गणगौर
ईसर ले चाल्यो गणगौर
चम्बल ब्हेती जावे पूर
डूब्यो घोड़ो ईसर ने गणगौर

गणगौर और ईसर काठ यानी लकड़ी के बनाये जाते हैं। इनको बनाने वाले खैरादी अथवा सुथार जाति के कलाकार होते हैं। चित्तौड़ जिले के बस्सी गांव के खैरादी बड़ी कलात्मक गणगौर और ईसर बनाने में दक्ष हैं। यहां के काष्ठशिल्पी मांगीलाल ने बताया कि बस्सी में यह परम्परा पिछले दो हजार वर्ष से चली आ रही है। गणगौर और ईसर लकड़ी में विभिन्न अंगों को उभारकर बनाने के साथ-साथ सादे रूप में भी बनाये जाते हैं। रंगों से उनका रूप निखारा जाता है। मांगीलाल ने बताया कि गणगौर में आस्था रखने वाले व्यक्ति और समाज नई गणगौर बनवाने के साथ-साथ पुरानी को भी नया रूप दिलाते हैं। मांगीलाल के बने गणगौर ईसर विदेश के संग्रहालयों में भी प्रदर्शित हैं।

गणगौर का अपहरण :

राजस्थान में पहले अलग-अलग रियासतें और ठिकाने थे। अपने राज्य के विस्तार के लिए ठिकानेदार आपस में एक-दूसरे से ईर्ष्या, द्वन्द्व और मनमुटाव रखते थे। किसी बात को लेकर जब कोई जागीरदार किसी से नाराज हो जाता तो अपना गुस्सा उस ठिकाने की गणगौर का अपहरण कर शांत करता और अपने शौर्य का प्रदर्शन करता। मेवाड़ के ठिकानों और जागीरदारों ने भी गणगौर के अवसर का लाभ उठाते हुए अन्य ठिकानों में मनाये जा रहे गणगौर उत्सव में दखल देते हुए भरे दरबार से वहां की गणगौर को उठा लाकर न केवल बहादुरी का परिचय दिया अपितु अपने ठिकाने का नाम भी जगजाहिर किया।

उदयपुर का बेदला ठिकाना प्रथम श्रेणी का ठिकाना रहा है। लगभग 400 वर्ष पूर्व यहो के राव सरदार भाले की नोक पर जो गणगौर उठा लाए उसके हाथ नहीं है। केवल धड़ रूप में यह गणगौर यहां के ठिकाने में देखी गई। ऐसी ही एक गणगौर गोगुन्दा का लालसिंह झाला मेवाड़ महाराणा सज्जनसिंह की चुनौती स्वीकार कर कोटा दरबार की गणगौर उड़ा लाया।

कोटा दरबार जब मजलिस का आनंद ले रहे थे तब बाहर से लालसिंह ने कहलवाया कि घोड़े पर गणगौर नचाने वाला आया है, यदि दरबार का आदेश हो जाये तो वह अपना करिश्मा दिखा सकता है। इस पर दरबार ने इजाजत दे दी। लालसिंह ने दरबार की गणगौर उठाकर घोड़े पर रखी और धीरे-धीरे उसे घुमाते हुए चाल तेज की और देखते-देखते घोड़ा छलांग मारते हुए वहां से उछला और पलभर में जादू की तरह गायब हो गया। उदयपुर लाकरजब महाराणा को गणगौर नजर की तो महाराणा ने उसकी तारिफ करते हुए प्रतिवर्ष गोगुन्दा में गणगोर मेले की इजाजत दी। तब से प्रतिवर्ष वहां गणगौर का मेला भरता आ रहा है। ऐसी ही एक गणगौर मेवाड़ के भीण्डर नामक ठिकाने वाले गुजरात के अहमदाबाद से उठाकर लाए।

ढड्ढों की गणगौर :

बीकानेर में ढड्ढों की गणगौर अन्य गणगौरों से भिन्न अनूठी गणगौर है। वहां

बीकानेर की ढड्ढों की गणगौर व भाइया

ढड्ढों के चौक में, ढड्ढों की हवेली की यह गणगौर चौक में ही दर्शनार्थ रखी जाती है। दो दिन तक यहां मेला भरता है जिसमें गणगौर माता से सम्मुख महिलाएं घूमर लेती हैं। मेले को बैठी गणगौर का मेला कहते हैं कारण कि इस गणगौर की कोई सवारी अथवा जुलूस नहीं

उदयपुर की गणगौर सवारी

निकाला जाता। इस गणगौर के पूरे पांव होते हैं जो अन्य किसी गणगौर के देखने को नहीं मिलेंगे।

प्रसिद्धि है कि लगभग 150 वर्ष पूर्व बीकानेर के सेठ उदयमल ढड्ढा द्वारा यह गणगौर प्रारंभ की गई थी। जब उनके कोई संतान नहीं हुई तो उन्होंने मनौती ली कि यदि उनके लड़का हो गया तो वे गणगौर माता की पूजा प्रारंभ करेंगे। यह मनौती फलीभूत हुई और चैत्र शुक्ला तृतीया को गणगौर के दिन ही उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई जिसका नाम चांदमल रखा गया। इस गणगौर के साथ पुत्र के रूप में भाइया की भी पूजा प्रारंभ हुई।

लोककलाविद् डॉ. महेन्द्र भानावत ने बताया कि सेठ उदयमल की यह गणगौर नख से सिर तक सोने, हीरे, पन्ने, माणक,मोती जैसे कीमती जवाहरात से जड़ी हुई है। आभूषणों में सोने में जड़ाऊ बोर, मोती लगा टीका, बोर के नीचे खांचा जोड़ी, नाक में हीरे की मोती जड़ाऊ नथ, गले में हीरा पन्ना माणक मोती वाला कठसरी गलपटिया, टेवटा, चंदन हार, हाथ में मातियों की बंगड़ी, गजरे, चूड़ियां और मटरिया, अंगुलियों में छल्ला तथा बींटा, कमर में जड़ाऊ कन्दोरे, पांव में बारह गहनों का सेट।

इसी तरह भाइया के आभूषणों में मोतियों की टोपी, कानों में ऊपर भंवरिये तथा नीचे मोती लगे लोंग, गले में पन्ना का कंठा, हाथों तथा पांवों में कड़े शोभित हैं। इनकी कीमत ही लगभग 40 करोड़ से अधिक आंकी जाती है। यह गणगौर पुलिस के कड़े पहरे में प्रदर्शित की जाती है।

उल्लेखनीय है कि सेठ उदयमल तत्कालीन बीकानेर महाराजा से घनिष्ट रूप में जुड़े हुए थे। महाराजा गंगासिंह उन्हें काकाजी कहते थे। यहीं कारण है कि उन्होंने उदयमल को ऐसी सर्वाधिक कीमती गणगौर निकालने की स्वीकृति प्रदान की। राजस्थान के किसी राजपरिवार और ठिकाने में ऐसी बेशकीमती गणगौर देखने को नहीं मिलेगी।

फूल-पत्तों की गणगौर :

राजस्थान में जहां राजपरिवारों और विभिन्न ठिकानों की गणगौरें बहुमूल्य हीरे जवाहरात से लकदक होती हैं। वहीं आदिवासियों तथा अन्य जातियों में ऐसी गणगौरें मिलेंगी जिनका पूरा श्रृंगार ही फूल-पत्तियों और जंगली फलों का है। ऐसी गणगौर में गरासिया जाति की गणगौर बड़ी लोकप्रिय है। इस जाति का सबसे बड़ा मेला ही गणगौर का मेला है जो वैशाख कृष्णा पंचमी को आबू रोड़ के पास सियावा गांव में भरता है। इस मेले में दूर-दूर तक के गांवों,घाटियों, पहाड़ों, फलों तथा जंगलों से झुंड के झुंड स्त्री-पुरुष नाचते-गाते उमड़ पड़ते है। यह मेला पिछले 250 वर्षों से भरता आ रहा है।

गरासिया बांस की खपच्चियों और छोटी-पतली डालियों की सहायता से गणगौर और ईसर बनाते हैं। मुंह की जगह मुंडी यानी मुखोटा लगाते हैं। ईसर को धोती-कुर्ता व फैटा पहनाया जाता है जबकि गणगौर को घाघरा,लुगड़ा, चोली पहनाई जाती है। इनको आम, नीम, महुआ, खजूर, पलाश आदि के पत्तों तथा कच्चे फलों की मालाओं से सजाया जाता है।

ऐसी ही गणगौर बणजारों की विवाह योग्य युवतियां बनाती हैं। घास-फूस, फल-फूल तथा डाल-कामड़ी से दिनभर गणगौर-ईसर बनाकर उन्हें घाघरा, लुगड़ी, कांचली-अंगरखी, धोती पगड़ी तथा चांदी के विभिन्न आभूषणों से सजाती है और संध्या को अपने सिर पर लिए गाती-नाचती जुलूस निकालती है। जाहिर है, ये गणगौरें भौतिक दृष्टि से कोई कीमती नहीं रखतीं किन्तु सहज एवं सरल उत्कृष्ट कला तथा आत्मिक, धार्मिक, आध्यात्मिक भावों का उत्कर्ष लिए होती हैं।

डॉ. महेन्द्र भानावत ने बताया कि ऐसी गणगौरें अन्य जातियों में भी देखने को मिलती हैं। चित्तौड़ जिले के बणजारों का खेड़ा गांव में विवाहातुर बालिकाएं भी ऐसी ही घास फूस पत्ते तथा टहनियों की सहायता से बड़ी कलात्मक गणगौर और ईसर बनाती हैं। संध्या को खेत से जुलूस के रूप में नाचती गाती गणगौर अपने गांव ले जाती हैं तब जो गीत गाती हैं उसकी पंक्तियां ही बड़ी मार्मिक होती हैं।

- शेष पृष्ठ सात पर

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।